

**विषकृत** वि. (तत्.) जिसे विषैला बना दिया गया हो, विषाक्त, जहरीला।

**विषकृमि** वि. (तत्.) विष में पलने वाला कीड़ा।

**विषघ्न** वि. (तत्.) विषहारी, विषनाशक, आयुर्वेद में अनेक ऐसी विषनाशक वनस्पतियों का उल्लेख है।

**विषण्ण** वि. (तत्.) 1. विषादयुक्त, उदास, दुखी, निरानंद 2. निराशा, हताशा।

**विषण्णानन** पुं. (तत्.) 1. उदास/निराश मुखमंडल, म्लान, मुख 2. निराशा/विषाद से भरा व्यक्ति।

**विषतंत्र** पुं. (तत्.) विष का प्रभाव नष्ट करने की चिकित्सा पद्धति, विष विज्ञान विभाग। anti-toxicological department

**विषतरु** पुं. (तत्.) 1. कुचला 2. विषैला वृक्ष/विष पादप।

**विषता** स्त्री. (तत्.) जहरीलापन, विषाक्तता हानि कारकता।

**विषतुल्य** वि. (तत्.) 1. विष के समान घातक, मारक, हानिकारक 2. अनिष्टकारक, नुकसानदायक।

**विषदंतक** वि. (तत्.) जहरीले दाँतों वाला, साँप, सर्प।

**विषदंष्ट्रा** स्त्री. (तत्.) विषदंत, साँप की विषैली दाढ़।

**विषद** वि. (तत्.) 1. विषदायक, जहर देने वाला 2. पानी देने वाला, जलद, मेघ, बादल।

**विषदाता** वि. (तत्.) विषद, विष देने वाला।

**विषदुष्ट** वि. (तत्.) विष से दूषित, विष के संपर्क में आने से जो विषैला हो गया हो।

**विषधर** वि. (तत्.) विषधारण करने वाला, सर्प, साँप, विषैला, जहरीला।

**विषनाशक** वि. (तत्.) विषहर, विष का प्रभाव नष्ट करने वाला, जहरमोहरा।

**विषनाशन** वि. (तत्.) 1. विषनाशक, जहर को दूर करने वाला, विषहर 2. सिरिस का पेड़, मानकंद।

**विषपादप** वि. (तत्.) विषैला वृक्ष।

**विषपुष्प** पुं. (तत्.) 1. नीलकमल 2. मैनाफल 3. विषैला फूल 4. अलसी का फूल 5. मदन।

**विष-प्रयोग** पुं. (तत्.) 1. विष का उपयोग, विष देना 2. औषधि के रूप में विष का प्रयोग 3. किसी को मारने के लिए जहर देना।

**विषफल** पुं. (तत्.) 1. विषैला फल, जहरीला फल 2. लाक्ष. बुरे काम का बुरा नतीजा।

**विषबंधु** वि. (तत्.) चंद्रमा।

**विषमंत्र** पुं. (तत्.) 1. विष हरने का मंत्र जानने वाला, सपेरा 2. विष झाड़ने का मंत्र।

**विषम** वि. (तत्.) 1. जो समान या बराबर न हो, असमान 2. कठिन, विकट (विषम परिस्थिति) 3. जिसका समाधान/हल न हो 4. भयानक, भयंकर, प्रचंड 5. प्रतिकूल, विपरीत 6. परस्पर जिनका मेल न हो 7. असमान तत्वों/अवयवों वाला 8. विलक्षण, अनोखा 9. ऊँचा-नीचा, ऊबड़-खाबड़ 10. कष्टदायक, पीड़ाकारक 11. गणि. जो सम न हो, जो पूरी तरह विभाजित न हो सके, विषम संख्या 12. विपत्ति, संकट, कष्ट 13. काव्य. विरोधमूलक अर्थालंकार जिसमें दो परस्पर विरोधी गुणों या क्रियाओं का वर्णन हो अथवा कर्ता को अभीष्ट फल की प्राप्ति न होकर अनिष्ट की प्राप्ति होने का वर्णन हो, ऐसे तीन विषम अलंकार माने गए हैं 14. छंद मात्रिक/वर्णिक छंद जिनके चारों चरणों में मात्राओं/वर्णों की समानता न हो, जो न सम हो और न अर्धसम हों 15. छः चरणों वाला मात्रिक छंदछप्पय और कुंडलिया मात्रिक विषम छंद है।

**विषमकाल** पुं. (तत्.) 1. विपरीत या बुरा समय 2. प्रतिकूल ऋतु या मौसम।

**विषमकोण** पुं. (तत्.) गणि./ज्या. जो कोण समकोण न हो।

**विषम-चतुरस्र/चतुर्भुज** पुं. (तत्.) गणि./ज्यामि. वह चतुर्भुज जिसकी चारों भुजायें समान लंबाई की हों परंतु चारों कोण समकोण न हो।